गौडपाद शङ्कराचार्य के गुरु थे अथवा नहीं ?

सत्यदेव कौशिक

गौडपादाचार्यविरचितम् आगमशास्त्रम्। एतस्य गौडपाद-कारिका इत्यपि प्रसिद्धिः। अस्याः कारिकायाः कर्तृत्वविषये महान् विवादः दृश्यते। किमयं गौडपादाचार्यः आदिशङ्करस्य गुरुरासीत् नेति च प्रश्नः। अमुं प्रश्नं युक्तियुक्तं विचार्य यदि गौडपादाचार्यः आद्यशङ्करस्य परमगुरुरभविष्यत् तर्हि आनन्दगिरिमध्व-कूरनारायणादिभिः तस्योल्लेखः कृतः स्यादिति निश्चिनोति निबन्धा।

गौडपाद विरचित **आगमशास्त्र** अथवा **गौडपादीयकारिका** के विषय में विद्वानों में बड़ा ऊहापोह है। **गौडपादीयकारिका** के रचयिता गौडपाद हैं अथवा नहीं? **गौडपादीयकारिका** एकल रचना है अथवा नहीं? **गौडपादीयकारिका** का अलातशान्ति नामक चतुर्थ प्रकरण बौद्धधर्म से प्रभावित है अथवा नहीं? इन प्रश्नों के उत्तरों के विषय में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। यही नहीं गौडपाद के जीवन एवं कृतित्त्व के विषय में भी विद्वानों में मतभेद है। गौडपाद कहाँ के निवासी थे? उनका काल क्या था? वे शङ्कराचार्य के गुरु थे अथवा नहीं? ये प्रश्न भी विद्वानों के लिए सन्देहास्पद ही बने हुए हैं। गौडपाद शङ्कराचार्य के गुरु थे अथवा नहीं इस विषय मे यहाँ चर्चा की जा रही है–

माण्डूक्यकारिकाभाष्य के अन्त में दी गयी तीन उपसंहरणात्मक कारिकाओं के आधार पर वेदान्त परम्परा आचार्य गौडपाद को शङ्कराचार्य का परम गुरु मानती है। यह परम्परा द्वितीय कारिका की अन्तिम पंक्ति मे उल्लिखित **'परमगुरु'** शब्द के आधार पर गौडपाद को आदि शङ्कर के परमगुरु के रूप में संकेकित मानती है।

ध्यातव्य है कि द्वितीय कारिका में यह बात स्पष्टरूपेण नहीं कही गयी है कि इस परमगुरु का इन कारिकाओं के लिखक के साथ गुरु शिष्य परम्परा के द्वारा साक्षात्सम्बन्ध था। इनमें केवल परमपूज्य आदि विशेषणों से विशेषित परमगुरु का उल्लेख मात्र है। यद्यपि इस कारिका की शब्दावली द्वारा विचाराधीन

परमगुरु लेखक के दादा गुरु होने की सम्भावना पूर्णरूपेण नकारी नहीं जा रही है। परन्तु इस बात को यह शब्दावली सुनिश्चित रूप से व्यक्त नहीं कर रही है।

इस कारिका का एक वैकल्पिक व्याख्यान यह भी हो सकता है कि यह कारिका भगवान् विष्णु के मानवीय अवतार परमगुरु नारायण की स्तुति के रूप में है। **'अलातशान्तिप्रकरण'** की प्रथम कारिका पर लिखित किसी भाष्य की व्याख्या द्वारा इस वैकल्पिक व्याख्यान की पुष्टि हो जाती है जहाँ भाष्यकार ने **'द्विपदां वरम्'** शब्द का तात्पर्य पुरुषोत्तम अथवा नारायण के रूप में ग्रहण किया है। यह भी सम्भव है कि यह कारिका शुकदेव की वन्दना में रचित हो, जो कि अद्वैत सम्प्रदाय में गौडपाद से भी अधिक प्राचीन गुरु के रूप में मान्य हैं। इस व्याख्यान की पुष्टि इस तथ्य से भी हो जाती है कि परमगुरु शाङ्कर अद्वैत वेदान्त के एक उत्तरकालीन आचार्य उपनिषद् ब्रह्मयोगी ने इस कारिका में आगत **'द्विपदां वरम्'** शब्द को नारायण के एक अवतार शुकदेव को संकेतित करने वाला कहा है।

इन तीनों कारिकाओं में अन्तिम कारिका ही एक मात्र ऐसी कारिका है जिसमें लेखक ने स्वयं को उद्धृत किया है। इस कारिका में जन्म एवं मरण के चक्र से लेखक की रक्षा करने वाले चरणों की वन्दना है। अतः यह कारिका भाष्यकार के अपने गुरु को ही संकेकित करती है, भले ही वह कोई भी रहा हो। यह कारिका निश्चित रूप से गोविन्दपाद का उसी प्रकार उल्लेख नहीं कर रही है जिस प्रकार द्वितीय कारिका में आचार्य गौडपाद का सुस्पष्ट उल्लेख नहीं है।

यहाँ यह भी सम्भावना बलवती प्रतीत होती है कि जब शाङ्कर अद्वैत वेदान्त के उत्तरकालीन अनुयायियों ने इस द्वितीय कारिका में आगत **'परमगुरु'** शब्द की भ्रामक व्याख्या श्रेष्ठ गुरु के स्थान पर **'दादा गुरु'** के रूप में की, तभी से यह परम्परा चल पड़ी कि आचार्य गौडपाद **'आदिशङ्कर'** के दादा गुरु थे।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि भाष्यकार ने कहीं भी यह नहीं कहा है कि **माण्डूक्यकारिका** की कारिकाएँ गौडपाद रचित हैं। उन्होंने तो इतना ही कहा है कि लेखक ने प्रकरण चतुष्ट्य के रूप में इसे उपनिबद्ध कर दिया है। इससे स्वयं भाष्यकार द्वारा इस सम्भावना को बलवती बना दिया गया है कि चारों प्रकरण विभिन्न लेखकों द्वारा रचित थे। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि सुरेश्वर द्वारा अपनी **बृहदारण्यकोपनिषद् वार्तिक** में गौडपाद कारिका की कुछ

कारिकाओं को उद्धृत करते हुए उसे गौडपाद रचित माना है[१]– इस मान्यता के प्रतिकूल जाता है। दूसरी ओर आनन्दगिरि ने अपनी टीका में कहा है कि स्वयं नारायण ने गौडपाद को चारों प्रकरणों वाली कारिकासमुच्चय द्वारा **माण्डूक्योपनिषद्** की व्याख्या करने हेतु प्रेरित किया है।[२] थामस वुड की मान्यता है कि भाष्यकार ने प्रथम अथवा द्वितीय कारिकाओं में अद्वैत परम्परा के किसी विशिष्ट गुरु की वन्दना नहीं की अपितु उन्होंने प्रथम कारिका में ब्रह्म की तथा द्वितीय कारिका में नारायण अथवा शुकदेव की वन्दना वेदान्त की यथार्थ शिक्षाओं का अनुसरण करने वाले सर्वोत्तम गुरुओं के रूप में की है।[३]

प्रो॰ रघुनाथ दामोदर करमरकर और विद्यारण्य ने अद्वैत शाखा के गुरुओं की सूची दी है।[४] इस सूची में ऐसा कुछ नहीं है जिसे गौडपाद युग और गौडपादोत्तर युग मे ऐतिहासिक प्रमाण स्वरूप स्वीकार किया जा सके। नारायण और ब्रह्म देवता हैं, तदनन्तर पाँच अर्द्ध पौराणिक व्यक्तित्व हैं। इस सूची में प्रथम ऐतिहासिक व्यक्तित्त्व गौडपाद ही हैं। रामचन्द्र विरचित **'पतञ्जलिचरितम्'** में आचार्य गौडपाद को भाष्यकार पतञ्जलि का शिष्य बताना उचित नहीं है क्योंकि पतञ्जलि और गौडपाद के काल में लम्बा अन्तराल है। मिलिन्दप्रश्न का राजा (मेनाण्डर) ग्रीक देशीय यवन शासक था जिसने पुष्यमित्र के समय साकेत और माध्यमिका (चित्तौड़) पर आक्रमण किये थे। मिलिन्द के इन आक्रमणों का उल्लेख महाभाष्य में हैं।[५] महाभाष्य में यह भी उल्लेख है कि पतञ्जलि पुष्यमित्र के पुरोहित थे– **पुष्यमित्रो यजते, याजका याजयन्ति। यत्र भवितव्यं पुष्यमित्रो याजयते, याजका याजयन्ति।**[६] अतः महाभाष्यकार पतञ्जलि का काल १५०ई॰ निश्चित है।

उपदेशसाहस्त्री एक ऐसी रचना है जिसे आदिशङ्कर कि रचना माना जाता है। इसका कुछ भाग निश्चित रूप से प्रामाणिक है। इस ग्रन्थ के एक अंश (२/१८/२) में यतीन्द्र की स्तुति की गयी है जिन्हें परमबुद्धि से संवलित वेदों का यथार्थ रक्षक कहा गया है। आगे इसी ग्रन्थ में उद्धरण मिलता है– **नमो यतीन्द्राय 'गुरोर्गरीयसे'** उपदेश साहस्त्री (२/१८/२)। अनेक विद्वानों ने इस उद्धरण का यह अर्थ किया है– मैं उस महान् यति की वन्दना करता हूँ जो मेरे गुरु के भी गुरु हैं तथा इन्होंने **'गुरोर्गरीयसे'** का अर्थ शङ्कर के भी गुरु गोविन्द के अपने गुरु गौडपाद के रूप में स्वीकार किया है।[७] यहाँ ध्यातव्य है कि संस्कृत के **'गरीयस्'** शब्द के अनेक अर्थों में से एक अर्थ शिक्षक असंगत नहीं है किन्तु इसके अतिरिक्त गुरु शब्द के संस्कृत कोशों में भारी, महत्त्वपूर्ण, महान, सम्माननीय एवं अति मूल्यवान् अर्थ भी किए गये हैं। अतः **'गुरोर्गरीयसे'** का सीधा अर्थ

अत्यधिक महान् गुरु– केवल एक गुरु से अति महान् गुरु अथवा अति सम्माननीय गुरु भी हो सकता है। **भगवद्गीता में 'गरीयस्'** शब्द से इन अर्थों की पुष्टि हो जाती है– १. ब्रह्मा से भी महान् **(गरीयसे ब्रह्मणो अपि–** २/३७) एवं २. पूज्य एवं सम्माननीय गुरु (**'त्वमस्य पूज्यश्चगुरुर्गरीयान्'** २/४३)।[८] प्राचीन ग्रन्थों के रचयिताओं ने अपने ग्रन्थों के आरम्भ में अपने गुरुओं की वन्दना की है किन्तु यहाँ **माण्डूक्यभाष्य** में उन्होंने गोविन्दपाद का उल्लेख न कर अपने दादागुरु गौडपाद का उल्लेख किया है– यह उचित प्रतीत नहीं होता।

संगमलाल पाण्डेय ने **छान्दोग्योपनिषद्** के आदि शङ्कराचार्य द्वारा कृत भाष्य– **"तस्मादिदं त्यक्तसर्वबाह्यैषणैरनन्यशरणैः परमहंसपरिव्राजकैरत्याश्रमिभिर्वेदान्तविज्ञानपरैरेव वेदनीयं पूज्यतमैः प्राजापत्यं चेमं सम्प्रदायमनुसारद्भिरूपनिबद्धं प्रकरणचतुष्टयेन। तथानुशासत्यद्यापि त एव नान्य इति"** (८/१२/१)[९] के आधार पर गौडपाद को आदि शङ्कर का परमगुरु माना है। उन्होंने इस भाष्य का अनुवाद इस प्रकार किया है– **'प्रजापति सम्प्रदाय का अनुसरण करने वाले परमपूज्य गुरुओं द्वारा चारों प्रकरणों में उपनिबद्ध आत्मतत्त्व वेदान्त दर्शन के ऐसे ज्ञाता जनों द्वारा वेदनीय है, जिन्होंने समस्त बाह्य एषणाओं का परित्याग कर दिया है, जो अनन्य शरण हैं, परमहंस परिव्राजक हो चुके हैं तथा आज भी केवल वे ही इसकी शिक्षा दे रहे हैं, कोई अन्य नहीं।'**[१०]

इस अनुवाद के आधार पर संगमलाल पाण्डेय ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि आगम शास्त्र जिसे शङ्कर ने अपने भाष्य के प्रारम्भ में प्रकरण चतुष्ट्य कहा है, किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा रचित है, जो स्वयं शङ्कर के जीवन काल में वेदान्त की पारम्परिक दर्शन की शिक्षा प्रदान कर रहा था। डॉ॰ पाण्डेय का यहाँ प्रकरणचतुष्ट्य का तात्पर्य रचना अथवा ग्रन्थ के रूप में लेना सर्वथा अनुचित है क्योंकि प्रकरणचतुष्ट्य का प्रयोग चार शिक्षाओं के लिए किया गया है, न कि आगमशास्त्र के भाष्य में उद्धृत प्रकरणचतुष्ट्य के लिए। प्रजापति सभी दोषों से मुक्त, अजर एवं अमर आत्मतत्त्व की शिक्षा दे रहे हैं। यहाँ प्रजापति द्वारा इन्द्र को निम्नलिखित चार शिक्षाएँ दी गयी है– १. आत्मा अशरीर है। २. आत्मा स्वप्न द्रष्टा है। ३. आत्मा सुसुप्ति अवस्था को प्राप्त करने वाला है। ४. आत्मा अशरीरी है तथा मृत्यु के अवसर पर मुक्त हो जाता है। भाष्य में प्रकरण शब्द का प्रयोग प्रकार और पर्याय जैसे शब्दों के स्थान पर इन्हें सूचित करने के लिए किया है।[११] इसी प्रकार इसी उपनिषद् के भाष्य (८/११/३) में आत्मतत्त्व के निवर्चन क्रम में प्रजापति तीन पर्यायों का प्रयोग (शरीर रूप में आत्मा, स्वप्न द्रष्टा रूप में

आत्मा और सुसुप्त रूप में आत्मा) करते हैं।[१२]

छान्दग्योपनिषद् के आदि शङ्कराचार्य द्वारा कृत भाष्य (८/१२/१) के उपर्युक्त वाक्य खण्ड का अनुवाद गंगानाथ झा द्वारा किया गया है जो यह दर्शाता है कि ये आत्मा के सम्बन्ध में शिक्षाएँ हैं, ग्रन्थ अथवा रचना नहीं है। अनुवाद इस प्रकार है– **'परम आत्मतत्त्व केवल उन परमहंस परिव्राजकों द्वारा वेदनीय है जिन्होंने समस्त बाह्य एषणाओं को त्याग दिया है, जो किसी अन्य की शरण में जाने वाले नहीं है, जिन्होंने जीवन की सर्वोत्तम अवस्था को ग्रहण कर लिया है, जो केवल वेदान्त विज्ञान परायण है, जो पूज्यतम हैं, जो प्रकरण चतुष्ट्य में प्रजापति द्वारा उपनिबद्ध सम्प्रदाय का अनुसरण करते हैं। आज भी केवल ऐसे पूज्यनीय ही इस सिद्धान्त की शिक्षा देते हैं, अन्य कोई नहीं।'**[१३]

इसके अतिरिक्त प्रकरणचतुष्ट्य पर यदि आनन्दगिरी की टीका पर दृष्टिपात करें तो उन्होंने प्रजापति द्वारा इन्द्र को उपदिष्ट इन्हें आत्मा की प्रकृति से सम्बन्धित चार शिक्षाएँ बताया है। आनन्दगिरि कहते हैं कि तीन अवस्थाएँ तथा चतुर्थ अवस्था इन चार शिक्षाओं के विषय हैं– **स्थान– त्रय तुरीयं चेत्येतद् विषयं प्रकरणचतुष्ट्यम्।**[१४]

थामस वुड का कथन है कि शङ्कर, मण्डन मिश्र, और सुरेश्वर में से किसी ने भी आगमशास्त्र के सर्वाधिक विवादग्रस्त अलातशान्ति प्रकरण से एक भी कारिका को उद्धृत नहीं किया है। साथ ही इनमें से किसी ने भी जाग्रत एवं स्वप्न अवस्था के अनुभवों के मध्य वास्तविक विभेद का खण्डन करने वाली किसी भी कारिका को उद्धृत नहीं किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने अलातशान्ति प्रकरण की १७वीं और १८वीं कारिकाओं को कहीं भी उद्धृत नहीं किया जो कि समूचे आगमप्रकरण में सर्वाधिक विवादग्रस्त एवं अस्पष्ट हैं। इन दिनों कारिकाओं की अद्वैत वेदान्त की स्थापना से कोई संगति नहीं बैठती है। ये कारिकाएँ बौद्ध दर्शन के शून्यवाद की शिक्षाएँ प्रतीत होती हैं। फिर भी वे ऐसे ग्रन्थ में अन्तर्भूत कर ली गयी है जो स्पष्ट रूप से वेदान्त का ग्रन्थ हैं।[१५] आगे उनका कथन है कि अलातशान्ति प्रकरण की इन दोनों कारिकाओं पर आनन्दगिरि मध्व और कूरनारायण ने इस ग्रन्थ की कारिकाएँ बताया है और परम गुरु गौडपाद का कोई भी उल्लेख किये बिना आगम प्रकरण पर अपने भाष्य लिखे हैं।[१६]

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है यद्यपि वेदान्त परम्परा उपसंहरणात्मक द्वितीय कारिका की अन्तिम पंक्ति में उल्लिखित परमगुरु शब्द को आदिशङ्कर के परमगुरु के रूप में संकेतित करती है। जबकि अन्तिम कारिका भाष्यकार के

अपने गुरु को ही संकेतित करती है, भले ही वह कोई भी रहा हो। यह कारिका गोविन्दपाद का उसी प्रकार उल्लेख नहीं कर रही है जिस प्रकार द्वितीय कारिका में आचार्य गौडपाद का सुस्पष्ट उल्लेख नहीं है। यदि आचार्य गौडपाद शङ्कर के परमगुरु होते तो आनन्दगिरि, मध्व और कूरनारायण आगमप्रकरण पर लिखित अपने भाष्यों में अवश्य उनका सीधे-सीधे उल्लेख करते।

---

१. सुरेश्वर ने २/१/३८६ में गौडपादीयकारिका ३/१५ को, ४/८/८८६,८८८ में गौडपादीयकारिका ३/३८,३/४६ को और १/४/८६ में गौडपादीयकारिका २/१७ को गौडपाद के वचनों के लिए प्रयुक्त किया है।

२. आनन्दगिरि टीका, पृ॰ २, १९१६ आनन्द आश्रम संस्कृत सीरिज़, पूना

३. माण्डूक्योपनिषद् एण्ड आगमशास्त्रः एन इन्वेस्टिगेशन इन्टू मीनिंग ऑफ द वेदान्त, थामस ई॰ वुड, पृ॰ १२९, १९९०, मोनोग्राफ न॰ ८, यूनीवर्सिटी ऑफ हवाई, होनोलुलु

४. गौडपादकारिका, रघुनाथ दामोदर करमरकर, इन्ट्रोडेक्शन, पृ॰ I, II, भण्डारकर ऑरियण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना १९७३

५. महाभाष्य ३/२/११

६. वही, ३/१/२६

७. (क) 'गौडपाद' इन 'ई॰आई॰पी॰' अद्वैत वेदान्त अप टू शङ्कर एण्ड हिज पुपिल्स, सम्पादक कार्ल एच॰ पोटर (प्रींसेटॉन) पृ॰ १०३, १९८१
(ख) प्रि– शङ्कर अद्वैत फिलॉसफी, पृ॰ ३०, संगमलाल पाण्डेय, इलाहाबाद, १९७४

८. माण्डूक्योपनिषद् एण्ड आगमशास्त्रः एन इन्वेस्टिगेशन इन्टू मीनिंग ऑफ द वेदान्त, थामस ई॰ वुड, पृ॰ २११, टिप्पणियाँ, १९९०ई॰ मोनोग्राफ न॰ ८, यूनीवर्सिटी ऑफ हवाई, होनोलुलु

९. छान्दोग्योपनिषद् सानुवाद शाङ्करभाष्य पृ॰ ९२२ गीता प्रेस गोरखपुर

१०. प्रि– शङ्कर अद्वैत फिलॉसफी, पृ॰ ३०-३१, इलाहाबाद १९७४

११. 'य एषोऽक्षिणि' इत्याद्युक्तं प्रजापतिना त्रिभिः पर्यायैर्न पर इति। चतुर्थे तु पर्याये देहान्मर्त्यात्समुत्थायाशरीरतामापन्नो ज्योतिःस्वरूपं यस्मिन्नुत्तमपुरुषे स्त्र्यादिभिर्जक्षत्क्रीडन्रममाणो भवति स उत्तमः पुरुषः पर उक्त इति चाहुः। (छान्दोग्योपनिषद् सानुवाद शाङ्करभाष्य ८/१२/१ पृ॰ ९१४, गीता प्रेस गोरखपुर

१२. यो मयोक्तस्त्रिभिः पर्यायैस्तमेवैतं नो एवान्यत्रैतस्मादात्मनोऽन्यं कञ्चन किं तर्ह्योतमेव व्याख्यास्यामि। (छान्दोग्योपनिषद् सानुवाद शाङ्करभाष्य ८/१२/३, पृ॰ ९०४, गीता प्रेस गोरखपुर

१३. छान्दोग्योपनिषद् भाष्य आनन्दगिरी टीका के साथ आनन्द आश्रम संस्कृत सीरिज़ १४, १९१३, पूना, अंग्रेज़ी अनुवाद गंगानाथ झा कृत (मद्रास, १८९९)

१४. वही

१५. माण्डूक्योपनिषद् एण्ड आगमशास्त्रः एन इन्वेस्टिगेशन इन्टू मीनिंग ऑफ द वेदान्त, थामस ई॰वुड पृ॰ १३०, १३५, १९९०ई॰, मोनोग्राफ न॰ ८, यूनीवर्सिटी ऑफ हवाई, होनोलुलु

१६. वही, पृ॰ १३५